

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 20, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 4, व्यवस्थित सूत्रीकरण, धर्मत्याग, अनन्त जीवन, महिमा

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 4, व्यवस्थित सूत्रीकरण, धर्मत्याग, अनन्त जीवन, महिमा।

हम परमेश्वर द्वारा अपने संतों के संरक्षण का अध्ययन कर रहे हैं, जो बाइबिल की शिक्षा द्वारा पूरक है; संतों को विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए, जो बाइबिल की शिक्षा से जुड़ा हुआ है, परमेश्वर अपने लोगों को आश्वस्त करता है, उन्हें अंतिम उद्धार का विश्वास देता है, क्योंकि वे उसके वचन पर भरोसा करते हैं, और आत्मा की आंतरिक गवाही का अनुभव करते हैं, और उसे अपने जीवन में काम करते हुए देखते हैं।

इस क्रम में एक साथ जुड़ने वाला चौथा सिद्धांत, संरक्षण, दृढ़ता और आश्वासन के सिद्धांतों के इस समूह में, धर्मत्याग है। आश्वासन और धर्मत्याग संरक्षण और दृढ़ता से संबंधित धार्मिक विषय हैं। आश्वासन पर विचार करने के बाद, हम बाद वाले की ओर मुड़ते हैं।

परिभाषा के अनुसार, धर्मत्याग, पहले से घोषित विश्वास से विचलन है। ईसाई संदर्भ में, यह मसीह में पहले से घोषित विश्वास से विचलन है। धर्मग्रंथों में धर्मत्याग की चेतावनियाँ दी गई हैं।

हालाँकि, चेतावनियों के कई अन्य कार्य भी हैं। मेरी पुस्तक, हमारा सुरक्षित उद्धार, का आधा भाग संरक्षण अंशों से संबंधित है, और दूसरा आधा भाग चेतावनी अंशों से संबंधित है। यहाँ नए नियम में चेतावनी अंशों के प्रमुख कार्य दिए गए हैं।

मुझे जो मुख्य बात पता चली, मैं कुछ हद तक हैरान था, वह है सच्चे और झूठे विश्वासियों के बीच अंतर करना। मत्ती 7:16-23, लूका 8:4-15, यूहन्ना 15:1-8, प्रेरितों के काम 8:13 और 8:20-24, रोमियों 8:13। नए नियम में चेतावनी वाले अंशों का मुख्य कार्य सच्चे और झूठे विश्वासियों के बीच अंतर करना है। मत्ती 7:16-23, लूका 8:4-15, यूहन्ना 15:1-8, प्रेरितों के काम 8:13 और 8:20-24, रोमियों 8:13। चेतावनी वाले अंशों का दूसरा कार्य विश्वास की कमी को उजागर करना है।

यूहन्ना 2:23-25, 1 तीमुथियुस 1:3-7, 1 तीमुथियुस 1:18-20, 2 तीमुथियुस 2:11-13. उजागर करना, कमजोर विश्वास को प्रकट करना. यूहन्ना 2:25-27, 1 तीमुथियुस 1:3-7, 1 तीमुथियुस 1:18-20, 2 तीमुथियुस 2:11-13.

चेतावनी वाले अंशों का एक और काम सुसमाचार को अस्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी देना है। मत्ती 10:33, 1 तीमुथियुस 4:1-5, 2 तीमुथियुस 2:17-19। सुसमाचार को अस्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी देना।

मत्ती 10:33, 1 तीमुथियुस 4:1-5, 2 तीमुथियुस 2:17-19। चेतावनी देने वाले अंशों का एक और काम है, उन बचाए न गए लोगों का पर्दाफाश करना जो बचाए हुए लगते हैं। 1 तीमुथियुस 5:8, 1 तीमुथियुस 5:11-12, 2 पतरस 2:20-22, 1 यूहन्ना 5:16-17, प्रकाशितवाक्य 22:18-19। उन बचाए न गए लोगों का पर्दाफाश करना जो बचाए हुए लगते हैं।

1 तीमुथियुस 5:8, 1 तीमुथियुस 5:11-12, 2 पतरस 2:20-22, 1 यूहन्ना 5:16-17, प्रकाशितवाक्य 22:18-19। पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा को दर्शाने के लिए। प्रेरितों के काम 5:5-10, याकूब 5:19-20। कुछ चेतावनी भरे अंश पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा को दर्शाते हैं। प्रेरितों के काम 5:5 और 5:10, याकूब 5:19-20। कम से कम एक अंश पद से अयोग्य ठहराए जाने की चेतावनी देता है।

1 कुरिन्थियों 9:27, पॉल को अपने पापों का डर है, संभावित पाप उसे प्रेरित के पद से अयोग्य ठहरा सकते हैं। पद से अयोग्य ठहराए जाने की चेतावनी देने के लिए। 1 कुरिन्थियों 9:27। इस दृष्टिकोण का समर्थन करने वाली व्याख्या के लिए, वुल्फ, वोल्फ़, जूडिथ, गुंड्री, वुल्फ, पॉल और दढ़ता, 2:33, 2:36 देखें। चेतावनी वाले अंशों का एक और कार्य, आप पहले से ही देख सकते हैं कि यह कोई सरल मामला नहीं है।

चेतावनी देने वाले अंशों के कई कार्य हैं, अलग-अलग कार्य। लौकिक न्याय के बारे में चेतावनी देना। 1 कुरिन्थियों 11:32। आप में से कुछ कमज़ोर हैं और कुछ बीमार हैं।

तुममें से कुछ लोग सो रहे हैं, जो परमेश्वर के मृत्यु के अस्थायी न्याय के लिए एक व्यंजना है। अस्थायी न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए। 1 कुरिन्थियों 11:32। इनके अलावा भी बहुत कुछ है, लेकिन मैंने अभी-अभी चेतावनी के विभिन्न कार्यों के प्रतिनिधि 1, 2, 3, 4, 5, 6, 8 अंश लिए हैं जो मेरी बात को पुष्ट करते हैं।

यह नाक गिनने जैसा सरल मामला नहीं है। ओह, ये सभी चेतावनी भरे अंश धर्मत्याग की चेतावनी देते हैं। नहीं, लेकिन कुछ लोग ऐसा करते हैं।

दढ़ता की आवश्यकता पर जोर देने के लिए। कुलुस्सियों 1:23, इब्रानियों 6:4-8, इब्रानियों 10:26-38। दढ़ता की आवश्यकता पर जोर देने के लिए। कुलुस्सियों 1:23, इब्रानियों 6:4-8, इब्रानियों 10:26-38। नया नियम चेतावनी देता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

नया नियम उन लोगों के लिए धर्मत्याग के खतरे की चेतावनी देता है जो मसीह को जानने का दावा करते हैं। मत्ती 24:9-10। तब वे तुम्हें सताने के लिए पकड़वा देंगे और तुम्हें मार डालेंगे। मेरे नाम के कारण सभी राष्ट्र तुमसे घृणा करेंगे, यीशु ने कहा।

तब बहुत से लोग भटक जाएँगे, एक दूसरे को पकड़वाँगे और एक दूसरे से नफरत करेंगे। मत्ती 24:9-10. 1 तीमुथियुस 4:1. अब आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है कि आने वाले समय में कितने लोग विश्वास से भटक जाएँगे, और छल करनेवाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर ध्यान देंगे। 1 तीमुथियुस 4 :1. इब्रानियों 3:12. हे भाइयो, चौकस रहो, ऐसा न हो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन हो जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए।

इब्रानियों 3:12. 1 यूहन्ना 2:19, एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुच्छेद है क्योंकि यह संरक्षण और धर्मत्याग के बीच संबंध स्थापित करता है। वे हमसे बाहर चले गए, झूठे शिक्षक चले गए, लेकिन वे हमारे नहीं थे। क्योंकि अगर वे हमारे होते, तो वे हमारे साथ ही रहते।

1 यूहन्ना 2:19. व्यवस्थित करना, संरक्षण, दृढ़ता, आश्वासन और धर्मत्याग। बाइबल पूर्ण व्यवस्थित धर्मशास्त्र प्रदान नहीं करती है, लेकिन यह कुछ सिद्धांतों को आंशिक रूप से व्यवस्थित करती है। यह संरक्षण और धर्मत्याग के लिए ऐसा करती है।

पवित्रशास्त्र संरक्षण और दृढ़ता के बीच संबंध स्थापित करता है। परमेश्वर का वचन सिखाता है कि परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है। वह उन्हें इसलिए रखता है ताकि वे विश्वास से पूरी तरह दूर न हो जाएँ और अंत में, सेंट ऑगस्टीन के क्रियाविशेषणों का उपयोग करें।

पवित्रशास्त्र यह भी सिखाता है कि परमेश्वर के लोगों को अंतिम उद्धार पाने के लिए विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए। हम इन दो सच्चाइयों को कैसे सहसंबंधित कर सकते हैं? हम उन्हें पूरी तरह से सहसंबंधित नहीं कर सकते क्योंकि वे परमेश्वर की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के बाइबिल द्वारा प्रकट रहस्य का एक उपसमूह हैं। मुझे लगता है कि मैंने इसके बारे में इतना बोल दिया है कि यह उन समस्याओं में से एक है।

त्रिदेव का सिद्धांत, मसीह के दो स्वभाव, पवित्रशास्त्र में आवश्यक तनाव या विरोधाभास हैं। ईश्वर की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी आवश्यक नहीं हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे समान रूप से रहस्यमय हैं। डीए कार्सन सहमत हैं।

उनकी किताबें *दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी देखें* और फिर एक और लोकप्रिय किताब, *हे प्रभु, कितना लंबा? दुख और बुराई पर ईसाई चिंतन*, कुछ ऐसा ही। उनके पास प्रोविडेंस के रहस्य पर एक अध्याय है और उसके बाद एक और अध्याय है जिसमें वे बाइबल के भीतर एक के बाद एक मार्ग दिखाते हैं, भगवान की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के बीच एक तनाव पैदा होता है। तनाव दूर नहीं होता है, और त्रिदेव के सिद्धांत और मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभावों की तरह, हम जो करते हैं वह तनाव में बाइबिल की शिक्षाओं को प्रस्तुत करना है।

हम दोनों पक्षों की गलतियों को बाहर रखते हैं, और हम तनाव के साथ जीते हैं। ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के दोनों पक्षों की कौन सी गलतियों को हम बाहर रखेंगे? सबसे पहले, ईश्वर संप्रभु है। वह पहले से ही तय कर लेता है और फिर जो कुछ भी होता है, उसमें अपनी इच्छा पूरी करता है।

इसी तरह, मनुष्य भी जिम्मेदार है। यह मायने रखता है कि हम मसीह में विश्वास करते हैं या नहीं। ईसाई होने के नाते यह मायने रखता है कि हम सुसमाचार को साझा करते हैं या नहीं।

यह मायने रखता है कि हम प्रार्थना करते हैं या नहीं, और कभी-कभी, ये चीजें ओवरलैप होती हैं। इसलिए, एक ही कार्य के दोहरे कारण होते हैं। वे मनुष्यों के कार्य हैं, यहाँ तक कि कभी-कभी

पापपूर्ण कार्य भी, जैसे कि परमेश्वर के पुत्र का क्रूस पर चढ़ना, परमेश्वर के पुत्र के साथ विश्वासघात, उसमें कैफा का हिस्सा, यहूदियों का यीशु के खून के लिए रोना।

उसी समय, वही कार्य, क्रूस पर चढ़ना, संसार के निर्माण से पहले परमेश्वर द्वारा योजनाबद्ध किया गया था। 1 पतरस 1, पुत्र को उसके क्रूस पर चढ़ने, उसके छुटकारे के कार्य, उसके लहू के माध्यम से छुटकारे में पहले से ही जाना जाता था, और, बेशक, क्रूस की योजना परमेश्वर द्वारा बनाई गई थी। इसलिए, प्रेरितों के काम 4, दुष्ट मनुष्यों के हाथों से, जो परमेश्वर ने पहले से तय किया था, वह हुआ।

एक ओर हम यह मानते हैं कि ईश्वर पूर्ण रूप से प्रभुता संपन्न है, लेकिन दूसरी ओर हम भाग्यवाद को भी मानते हैं। भाग्यवाद और बाइबल की इस शिक्षा के बीच अंतर यह है कि ईश्वर जो कुछ भी घटित होता है, उस पर प्रभुता संपन्न है। शास्त्र में ईश्वर एक चरित्रवान व्यक्ति है। हम यूनानी भाग्य के मोह में नहीं हैं।

यह सच नहीं है कि जो होगा, वह होगा। हम बस हाथ जोड़कर हार मान लेते हैं। नहीं, ईश्वर ही सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, उद्धारक, पूर्णकर्ता है। वह अपने विधान से काम करता है।

हमने कभी इस बात से इनकार नहीं किया कि यह रहस्यपूर्ण है, लेकिन यह भाग्यवाद नहीं है। हम अवैयक्तिक भाग्य और शक्तियों से नहीं बल्कि जीवित और सच्चे ईश्वर से निपट रहे हैं जो शाश्वत और व्यक्तिगत है। दूसरी ओर, वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी है।

जैसा कि मैंने इन व्याख्यानों में पहले कहा था, मैं इस बात से आश्चर्य हूँ कि लोगों को नरक में भेजने का आधार उनके पाप हैं। पूर्ण प्रस्तुति, उनके पापपूर्ण विचार, शब्द और कर्म। संक्षेप में, आमतौर पर सिर्फ उनके एर्गा, उनके काम, उनके कर्म, उनके कर्म।

बार-बार, हर अनुच्छेद में, चाहे वह सटीक शब्दावली का उपयोग करता हो या नहीं, लोगों को उनके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार आंका जाता है और पवित्र और न्यायी ईश्वर के विरुद्ध उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उनकी निंदा की जाती है। हम उस पक्ष के लिए क्या मापदंड निर्धारित करते हैं? हमें ईश्वर की संप्रभुता के एक पक्ष पर भाग्यवाद को रद्द करना चाहिए, मानवीय जिम्मेदारी के पक्ष में, हमें दार्शनिकों द्वारा इसके विपरीत पूर्ण शक्ति कहे जाने वाले को भी रद्द करना चाहिए। हमारे कार्य महत्वपूर्ण हैं।

जैसा कि मैंने कहा, यह मायने रखता है कि लोग यीशु पर विश्वास करते हैं या नहीं, उदाहरण के लिए। लेकिन हम सृष्टिकर्ता की योजना को उसी पर नहीं गिरा सकते। हमारे पास इसके विपरीत करने की पूर्ण शक्ति नहीं है।

हम प्राणी हैं। हम परमेश्वर की संप्रभु योजना को कमजोर नहीं करते। इसलिए, यह मायने रखता है कि मैं गवाह हूँ या नहीं, है न? ठीक है।

अगर मैं गवाही नहीं देता, तो क्या यह दुनिया के सुसमाचार प्रचार के लिए परमेश्वर की योजना को रद्द कर देगा? क्या तुम मज़ाक कर रहे हो? नहीं, वह प्रभु है। हाँ, अगर ऐसा है तो मैं उसके

खिलाफ़ विद्रोह कर रहा हूँ। और मुझे आशीर्वाद नहीं मिलेगा, और परमेश्वर मेरा उपयोग नहीं करेगा, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह किसी का उपयोग नहीं करेगा।

तो, आखिरकार प्राणी सृष्टिकर्ता की इच्छा को विफल नहीं करता। क्या इससे हमारी सारी समस्याएं हल हो जाती हैं? नहीं, यह एक रहस्य है। दुनिया में यीशु का सूली पर चढ़ना सबसे बड़ा अपराध और ईश्वर का सबसे बड़ा कार्य कैसे है, साथ ही साथ उनका पुनरुत्थान सबसे बड़ी संख्या में सबसे बड़ी भलाई लाने के लिए कैसे है?

मुझे समझ नहीं आया, लेकिन मैं ईश्वर की कही बात पर यकीन करता हूँ। ईश्वर का संरक्षण हमारी दृढ़ता का कारण बनता है। संरक्षण और दृढ़ता इस रिश्ते में, इस संबंध में हैं।

संरक्षण दृढ़ता का कारण बनता है। इसलिए, अगर हम संरक्षण के पीछे खड़े हैं, तो एक कारण संबंध है। अगर हम दृढ़ता के पीछे खड़े हैं और पीछे देखते हैं, तो दृढ़ता भगवान के संरक्षण का परिणाम है।

इसका मतलब है कि यह फल है, परिणाम है, कभी-कभी परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को सुरक्षित रखने का सबूत है। मेरे पास इन सभी बिंदुओं पर विस्तृत नोट्स देने का समय नहीं है। न केवल परमेश्वर का संरक्षण हमें बचाए रखता है, बल्कि हमारी दृढ़ता संरक्षण का एक फल है।

अगर हम परमेश्वर से शुरू करते हैं, तो हम देखते हैं कि वह अपने लोगों की रक्षा करता है। उसका संरक्षण ही हमारी दृढ़ता का अंतिम कारण है। कई निकटतम कारण हैं, लेकिन अंतिम कारण परमेश्वर का अनुग्रह है, उसका विजयी अनुग्रह।

अगर हम इंसानों से शुरू करें, तो हम देखेंगे कि परमेश्वर का संरक्षण हमारे जीवन में फल लाता है, जिसमें दृढ़ता भी शामिल है। इस प्रकार, हमारी दृढ़ता इस बात की पुष्टि है कि वह हमें सुरक्षित रखता है। कई अंश इसकी पुष्टि करते हैं।

यीशु ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बात की और दो बार चेतावनी दी, तुम उन्हें उनके फलों से पहचानोगे। मत्ती 7:16, और 20. पवित्रशास्त्र स्वयं संरक्षण, दृढ़ता, आश्वासन और धर्मत्याग से संबंधित है।

यह नए नियम की पुस्तकों में ऐसा करता है। बाइबल इन संरक्षण, दृढ़ता और धर्मत्याग को एक साथ इस तरह से लाती है कि हमें उन्हें और उनके अंतर्संबंध को समझने में मदद मिलती है। वही नए नियम की पुस्तकें तीनों सिद्धांतों को सिखाती हैं।

संरक्षण, लूका 22:31 और 32. दृढ़ता, लूका 8:4 से 15. धर्मत्याग, लूका 21:16 से 19.

संरक्षण, यूहन्ना 6:37 से 44. यूहन्ना 10:26 से 30. दृढ़ता, यूहन्ना 15:1 से 8. धर्मत्याग, यूहन्ना 13:21 से 30.

संरक्षण, रोमियों 5:9 और 10. रोमियों 8:31 से 39. दृढ़ता, रोमियों 8:13.

धर्मत्याग, रोमियों 11:17 से 21. यही बात 1 कुरिन्थियों में भी सच है. मैं उन्हें नहीं पढ़ूँगा.

इब्रानियों, संरक्षण, इब्रानियों 6:13 से 20. इब्रानियों 7:23 से 25. दृढ़ता, इब्रानियों 10:36.

धर्मत्याग, इब्रानियों 3:14. इब्रानियों 10:26 से 39. संरक्षण, 1 यूहन्ना 5:18.

दृढ़ता, 1 यूहन्ना 5:16, 17. धर्मत्याग, 1 यूहन्ना 2:19. नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर के संरक्षण, संतों की दृढ़ता और विरोधाभास के डर के बिना धर्मत्याग की बात की।

उनका मानना है कि ईश्वर ने अपने लोगों को सुरक्षित रखा है और साथ ही वे यह भी मानते हैं कि विश्वासियों को अंत तक विश्वास, प्रेम और पवित्रता में बने रहना चाहिए और कुछ लोग विश्वास से भटक जाते हैं। जब तक हम उन पर खुद का विरोध करने का आरोप नहीं लगाते, जो मैं नहीं लगाऊँगा, उनका इरादा दृढ़ता की आवश्यकता और धर्मत्याग की चेतावनियों को संरक्षण की सच्चाई को रद्द करने का नहीं था। उनका इरादा संरक्षण की सच्चाई को विश्वासियों के लिए दृढ़ रहने की आवश्यकता को कम करने का नहीं था।

उनका यह भी इरादा नहीं था कि संरक्षण की उनकी शिक्षा धर्मत्याग की चेतावनियों को नकार दे। हम इन तीनों सिद्धांतों को पूरी तरह से सहसंबंधित नहीं कर सकते। संरक्षण ही दृढ़ता का कारण है।

दृढ़ता संरक्षण के प्रमाणों में से एक है। जैसा कि मैंने पहले कहा, हालाँकि धर्मशास्त्रीय चेतावनियों के कई उद्देश्य हैं, लेकिन प्राथमिक उद्देश्य सच्चे और झूठे विश्वासियों के बीच अंतर करना है। जैसा कि पहले कहा गया है, संतों को दृढ़ रहने के लिए प्रेरितिक आग्रह और धर्मत्याग की चेतावनियाँ उन साधनों में से हैं जिनका उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए करता है।

फिर भी, हम ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के रहस्य के आगे झुकते हैं और उनके गतिशील परस्पर क्रिया को पूरी तरह से समझा नहीं सकते। एक अंश विशेष रूप से दृढ़ता और धर्मत्याग को एकीकृत करता है। 1 यूहन्ना 2:18 और 19.

बच्चों, यह आखिरी घड़ी है, और जैसा कि आपने सुना है कि मसीह विरोधी आ रहा है, अब भी, कई मसीह विरोधी आ चुके हैं। इससे हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है। वे हमसे बाहर चले गए, लेकिन वे हमारे नहीं थे।

क्योंकि यदि वे हमारे होते, तो हमारे साथ रहते। परन्तु वे इसलिये निकले कि यह प्रगट हो जाए कि वे हमारे नहीं हैं। 1 यूहन्ना 2:18 और 19.

मसीह विरोधी का विषय बाइबल के कई विषयों के साथ पहले से ही होने और अभी तक नहीं होने की विशेषता साझा करता है। अंतिम समय का मसीह विरोधी व्यक्ति अभी तक प्रकट नहीं हुआ

है, लेकिन यूहन्ना कह सकता है कि पहली शताब्दी में ही, उद्धरण, कई मसीह विरोधी आ चुके हैं। श्लोक 18.

यूहन्ना उन्हें झूठे शिक्षकों के रूप में पहचानता है जो यूहन्ना के चर्चों में गए थे। वे बाहरी तौर पर मसीह और उसके लोगों के थे, लेकिन गहरे अर्थ में वे मसीह के नहीं थे। वे बाहरी तौर पर ईसाई लगते थे, लेकिन उनके धर्मत्याग से पता चलता था कि वे झूठे विश्वासी थे।

पद 19. यूहन्ना के शब्द बता रहे हैं। अगर वे हमारे होते, तो हमारे साथ ही रहते। यह दूसरी श्रेणी की यूनानी सशर्त शर्त है।

अगर वे हमारे होते, लेकिन वे हमारे नहीं थे, तो वे हमारे साथ ही रहते, लेकिन वे हमारे साथ नहीं रहे। दूसरे शब्दों में, सच्चे विश्वासी दृढ़ रहते हैं। वे धर्मत्यागी नहीं होते।

और इसी तरह आप क्रिया का उच्चारण करते हैं, धर्मत्याग नहीं। जो लोग धर्मत्याग करते हैं, वे प्रकट करते हैं कि वे कभी सच्चे विश्वासी नहीं थे। नए नियम का एक अंश संरक्षण, दृढ़ता, आश्वासन और धर्मत्याग को एक साथ जोड़ता है।

इब्रानियों 6:1 से 20. यहाँ बड़ी तस्वीर है। इब्रानियों 6, 1 से 3 में दृढ़ बने रहने का प्रोत्साहन दिया गया है।

इब्रानियों 6, आयत 4 से 6 धर्मत्याग की कड़ी चेतावनी देती है। आयत 7 से 10 आश्वासन देती है कि मेरे पाठकों में से अधिकांश बचाए गए हैं। इब्रानियों 6 की आयत 11 और 12 दृढ़ता से लगे रहने, आश्वासन को मजबूत करने का प्रोत्साहन देती है।

इब्रानियों 6 की आयतें 13 से 20 तक संरक्षण का दृढ़ आश्वासन देती हैं। अध्याय 5:11 से 14 में उनकी आध्यात्मिक अपरिपक्वता की फटकार, कुछ विश्लेषण, फटकार के बाद, लेखक पाठकों को 6, 1 से 3 में दृढ़ता के लिए प्रोत्साहित करता है। इसलिए, आइए हम मसीह के बारे में प्राथमिक शिक्षाओं को छोड़ दें और परिपक्वता की ओर बढ़ें, आयत 1। इसके बाद धर्मत्याग की एक मजबूत चेतावनी दी गई है, जैसा कि पवित्र शास्त्रों में पाया जाता है। उद्धरण, क्योंकि उन लोगों के लिए पश्चाताप करना असंभव है जो महान आध्यात्मिक आशीर्वाद का अनुभव करते हैं, मेरा सारांश, और जो दूर हो गए हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपने ही नुकसान के लिए परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ा रहे हैं और उसका अपमान कर रहे हैं, श्लोक 4 से 6 तक। इसके बाद, लेखक दो तरह की भूमि का उदाहरण देता है। दोनों को परमेश्वर के आशीर्वाद का शासन प्राप्त होता है, और पहली भूमि अच्छी वनस्पति पैदा करती है, जिसे परमेश्वर आशीर्वाद देता है, लेकिन दूसरी भूमि केवल काँटे और ऊँटकटारे पैदा करती है, बेकार है, और परमेश्वर इसे शाप देने और जलाने के लिए तैयार है, श्लोक 7 से 8 तक। दो तरह की भूमि क्रमशः सच्चे और झूठे विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करती है। लेखक चाहता है कि उसके पाठक पहली तरह की भूमि से पहचान करें और दृढ़ रहें।

कड़ी चेतावनी और विवेकपूर्ण दृष्टांत के बाद, लेखक अपने पाठकों के बहुमत को पद 9 और 10 में प्रोत्साहित करने वाले शब्द प्रदान करता है। भले ही हम इस तरह से बात कर रहे हैं, प्यारे दोस्तों, आपके मामले में, हम उन चीजों के बारे में आश्वस्त हैं जो बेहतर हैं और जो उद्धार से संबंधित हैं, पद 9। वह पूरी मण्डली को धर्मत्याग के बारे में चेतावनी देता है, यह जानते हुए कि कुछ लोग इस पर विचार कर रहे हैं, जबकि वह उनके उद्धार और दृढ़ता के बहुमत में आश्वस्त रहता है। फिर से, वह उन्हें दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि उनका आश्वासन बढ़े।

उद्धारण, अब हम चाहते हैं कि आप में से प्रत्येक अंत तक अपनी आशा के पूर्ण आश्वासन के लिए समान परिश्रम प्रदर्शित करे, ताकि आप आलसी न बनें बल्कि उन लोगों की नकल करें जो विश्वास और दृढ़ता के माध्यम से वादों को प्राप्त करते हैं, श्लोक 11 और 12। अक्सर उपेक्षित, अगले आठ श्लोक भगवान के अपने संतों के संरक्षण के लिए एक मजबूत मामला बनाते हैं। मैंने पहले इन तर्कों का सारांश दिया था, यह दिखाते हुए कि भगवान विश्वासियों को अंतिम उद्धार प्रदान करते हैं।

यहाँ, मैं बस उन्हें सूचीबद्ध करता हूँ। वादा करके, 6:13. शपथ लेकर वादे की पुष्टि करना, श्लोक 14. अपने संकल्प को अपरिवर्तनीय बताना, 17.

हमें उसकी सत्यता की याद दिलाते हुए, पद 18. उद्धार की हमारी आशा को आत्मा का लंगर बताते हुए, पद 19. अपने लंगर को तीन बार पूरी तरह से विश्वसनीय बताते हुए, 19.

यह सिखाते हुए कि मसीह, हमारा अग्रदूत, हमारे लिए पहले ही स्वर्ग में प्रवेश कर चुका है, 19 से 20। और वह मसीह के पौरोहित्य की अनंतता की पुष्टि कर रहा था, पद 20। इब्रानियों का लेखक चार सिद्धांतों का निष्कर्ष निकालता है और चार सिद्धांतों को सहसंबंधित करता है, और इब्रानियों का लेखक, अपने पाठकों को उपदेश देने के लिए इन चार सिद्धांतों को एक विस्तारित संदर्भ में सहसंबंधित करता है।

ऐसा करने से, वह हमारी समझ को बढ़ाता है। संरक्षण को अंतिम स्थान पर रखना और इस पर विस्तृत रूप से विचार करना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सच्चे विश्वासी कभी भटक नहीं सकते। परमेश्वर अपने लोगों को अंतिम उद्धार के लिए सुरक्षित रखता है।

लेखक दृढ़ता से बने रहने के लिए प्रोत्साहन और धर्मत्याग की चेतावनियों को संरक्षण के साथ संगत मानता है। एक पादरी के रूप में, वह जानता है कि चर्च विश्वासियों और अविश्वासियों का मिश्रण है। प्रत्येक चर्च के सदस्य को विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहन और चेतावनी की आवश्यकता होती है।

कुछ लोगों को आध्यात्मिक सुस्ती की बीमारी से जगाने के लिए परमेश्वर के वचन की मजबूत दवा की आवश्यकता होती है। मसीहियों को एक मजबूत आश्वासन की आवश्यकता है जो परमेश्वर के वादों, भीतर आत्मा की सेवकाई और उनके साथ चलने से आता है। चर्च के नेताओं को अपने झुंड से ईमानदारी से प्यार करना चाहिए, उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना



चाहिए, उन्हें धर्मत्याग के खतरे से आगाह करना चाहिए और बहुमत को आश्वासन में जीने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष। जैसा कि हमने देखा है, परमेश्वर हमारे उद्धार का आरंभ, मध्य और अंत है। परमेश्वर का अनुग्रह इसे आरंभ करता है, और परमेश्वर का अनुग्रह इसे पूरा करेगा।

हम पवित्रता में दृढ़ रहेंगे क्योंकि परमेश्वर अनुग्रह में दृढ़ रहता है। चार्ल्स हैडन स्पर्जन, उनका उपदेश, अनुग्रह का पूरा संसार। और इस बीच, परमेश्वर का अनुग्रह हमारी आध्यात्मिक यात्रा के लिए ईंधन प्रदान करता है।

स्पर्जन ने ठीक ही कहा: यहाँ से स्वर्ग के बीच, हर मिनट जो ईसाई जीता है वह अनुग्रह का एक मिनट होगा। जब हमें ज़रूरत होती है, तो ईश्वर की कृपा हमें साहस देती है। तो आइए हम आत्मविश्वास के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएँ, ताकि हमें दया मिले और ज़रूरत के समय मदद करने के लिए अनुग्रह मिले।

जब हम पाप में होते हैं, तो परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पश्चाताप को बढ़ावा देता है और हमारी पवित्रता को बढ़ावा देता है। उद्धरण: परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ है, जो सभी लोगों को उद्धार प्रदान करता है, हमें अधर्म और सांसारिक वासनाओं को त्यागने और वर्तमान युग में नियंत्रित, ईमानदार और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित करता है। तीतुस 2:11 और 12.

जब हमें परमेश्वर की सेवा करते रहने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है, तो परमेश्वर का अनुग्रह हमें सक्षम बनाता है, जैसा कि पौलुस ने गवाही दी है। उद्धरण, मैंने उन सभी प्रेरितों से अधिक परिश्रम किया, यद्यपि यह मैं नहीं था, परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह जो मेरे साथ है। पहला कुरिन्थियों 15:11.

जब हम थके हुए और कमज़ोर होते हैं, तो परमेश्वर का अनुग्रह हमें मज़बूत बनाता है, जैसा कि पॉल ने प्रमाणित किया है। उद्धरण, मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी शक्ति कमज़ोरी में परिपूर्ण होती है। जब हमने ये व्याख्यान शुरू किए, तो हमने कहा कि हम दो अपवादों के साथ उद्धार के अनुप्रयोग से निपट रहे थे: पहला विषय और अंतिम।

पहला था ईश्वर का चुनाव, जो निश्चित रूप से उद्धार के अनुप्रयोग का हिस्सा नहीं है, लेकिन यह दुनिया के निर्माण से पहले ईश्वर द्वारा उद्धार की योजना बनाना है। यहाँ इन विशेष सिद्धांतों से निपटने के अंत में, इससे पहले कि हम उन्हें कुछ बड़े बाइबिल विषयों के साथ सहसंबंधित करने का प्रयास करें, लेकिन यहाँ विभिन्न सिद्धांतों के साथ विवेकपूर्ण तरीके से निपटने के अंत में, हम फिर से इस बार, पहले नहीं, बल्कि उद्धार के अनुप्रयोग से आगे जाते हैं और अनन्त जीवन और महिमा के साथ व्यवहार करते हैं। यहाँ अनन्त जीवन पर बाइबिल की शिक्षा का बाइबिल सारांश है।

पुराने नियम में, जीवन का अर्थ आमतौर पर शारीरिक जीवन और आशीर्वाद होता है। हालाँकि अनंत जीवन वाक्यांश दानियेल 12:3 में आता है, अन्य पाठ भी इसका पूर्वाभास देते हैं कि यह केवल दानियेल 12:3 में आता है, जो कि अनंत जीवन की अभिव्यक्ति है। अन्य पाठ भी नए

नियम की शिक्षाओं का पूर्वाभास देते हैं, विशेष रूप से वे जो मृतकों के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करते हैं और कुछ भजन जो जीवन या हमेशा के लिए शब्दों का उपयोग करते हैं।

नए नियम के लेखकों ने कभी-कभी भौतिक जीवन के लिए पुराने नियम के शब्दों का इस्तेमाल किया, जो आने वाले युग में जीवन के प्रतीक हैं। योहानिन लेखन के बाहर, नए नियम में अनंत जीवन ज्यादातर एस्केटन की ओर देखता है, आने वाले युग में जीवन की ओर, जब विश्वासी यीशु मसीह में और उसके माध्यम से परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए जीवन का आनंद लेंगे। हम यहूदा 21 में इस एस्केटोलॉजिकल जोर को देखते हैं, उद्धरण, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो, अनंत जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की प्रतीक्षा करते रहो, उद्धरण बंद करें।

विश्वासी उस दया की प्रतीक्षा करते हैं जो अंतिम दिन उन पर बरसेगी, और उस दिन इनाम अनंत जीवन होगा। हालाँकि, यहूदा इस बात पर जोर देता है कि विश्वासी इस वर्तमान बुरे युग के दौरान अभी अनंत जीवन का आनंद लेते हैं। अंत समय का उपहार पहले से ही इस वर्तमान युग में प्रवेश कर चुका है।

ऐसा जीवन पुनरुत्थान पर पूर्ण होगा, लेकिन विश्वासियों को अब आश्चर्य किया जा सकता है कि उनके पास अनंत जीवन है। इस युग में एस्केटन ने आक्रमण किया है। भविष्य का जीवन उन लोगों को दिया जाता है जो अभी यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं, कम से कम भविष्य की प्रत्याशा में, उन लोगों को जो पेशे और जीवन में उनके शिष्यों के रूप में उनका अनुसरण करते हैं।

महिमा का संक्षिप्त बाइबिल सारांश। नए नियम में महिमा स्पष्ट रूप से भविष्य का आशीर्वाद है, हालाँकि एक मार्ग यह भी दर्शाता है कि यह वर्तमान में भी है। दूसरा, कुरिन्थियों 3:18, 318, जो परमेश्वर की कृपा से विश्वासियों के महिमा से महिमा की ओर बढ़ने की बात करता है।

फिर भी, विश्वासियों के पास अभी वह पूरी महिमा नहीं है जो मसीह के लौटने पर उनकी होगी। महिमा का वादा विश्वासियों को वर्तमान कष्टों के दौरान प्रोत्साहित करता है, उन्हें उनकी प्रतीक्षा कर रहे वैभव और सुंदरता की याद दिलाता है। महिमा उन लोगों के लिए गारंटीकृत है जो पहले से ही ज्ञात हैं, पूर्वनिर्धारित हैं, बुलाए गए हैं और न्यायसंगत हैं।

जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है, वे निश्चित रूप से अनन्त महिमा प्राप्त करेंगे क्योंकि उन्हें बुलाने वाला परमेश्वर उन्हें अंत तक मजबूत करेगा, और विश्वासियों की महिमा का अंतिम लक्ष्य यह है कि परमेश्वर उन पर इस तरह के अनुग्रह को बरसाने के लिए अनंत काल तक प्रशंसा पा सके। मेरे पास अनन्त जीवन और महिमा पर कुछ संक्षिप्त नोट्स हैं, साथ ही व्यवस्थित सूत्रीकरण भी हैं। यहाँ मेरे प्रमुख हैं।

महिमा में पुनःस्थापित। अतीत, वर्तमान और भविष्य की महिमा से अभिलक्षित। मसीह की छवि के अनुरूप।

मसीह की महिमा में सहभागिता। महिमामय शरीरों के साथ जीवित। एक नवीनीकृत सृष्टि में निवास करना।

व्यवस्थित सूत्रीकरण, अनन्त जीवन और महिमा। महिमा में पुनःस्थापित। हमें परमेश्वर की छवि में परमेश्वर की आराधना करने और उसे प्रदर्शित करने के लिए बनाया गया था, लेकिन हम सभी ने परमेश्वर की महिमा को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और इसके बजाय अपनी महिमा की तलाश की।

इसके माध्यम से, हमने उस महिमा को खो दिया जो परमेश्वर ने हमें उसके स्वरूप के वाहक के रूप में प्रदान की थी। हालाँकि, उसकी कृपा से और मसीह, पूर्ण छवि के साथ एकता के माध्यम से, परमेश्वर हमें बचाता है, हमें पूर्ण छवि वाहक के रूप में पुनर्स्थापित करता है ताकि हम उस महिमा में भाग ले सकें और उसे प्रतिबिंबित कर सकें जिसकी हम पूरे समय लालसा करते रहे हैं। इस प्रकार, हम महिमा के प्राप्तकर्ता हैं, महिमा के माध्यम से परिवर्तन से गुजर रहे हैं, और महिमा के भागीदार होंगे।

हमारा उद्धार केवल पाप से ही नहीं, बल्कि महिमा से भी है। हम जो परमेश्वर की महिमा को मूर्तियों के लिए बदल देते हैं, हम जो परमेश्वर की महिमा के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, उसी महिमा के द्वारा पूरी तरह से परिवर्तित हो चुके हैं, हो रहे हैं, और हो जाएँगे जिसे हमने तुच्छ जाना और अस्वीकार किया। रोमियों 1:18 से 31.

रोमियों 3:23. रोमियों 8:28 से 30. रोमियों 9:23.

2 कुरिन्थियों 3:18 . एक बार और. रोमियों 1:18 से 31. रोमियों 3:23. रोमियों 8:28 से 30. 9:23.

2 कुरिन्थियों 3:18. महिमा की विशेषता, भूत, वर्तमान और भविष्य। मसीह में हमारी महिमा वास्तव में भूत, वर्तमान और भविष्य है।

हमें पहले से ही महिमा दी गई है जैसा कि यीशु ने कहा, उद्धारण, हे पिता, जो महिमा तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दे दी है, ताकि वे भी वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं। यूहन्ना 17:22। हम महिमा से महिमा में परिवर्तित हो रहे हैं जैसा कि पौलुस ने व्यक्त किया है।

यहाँ 2 कुरिन्थियों 3:18 है। हम सब के सब खुले चेहरे से प्रभु की महिमा को दर्पण में देखते हैं, और महिमा से महिमा में उसी स्वरूप में बदलते जाते हैं। यह प्रभु की ओर से है जो आत्मा है।

2 कुरिन्थियों 3:18. और हम महिमा की प्रतीक्षा करते हैं जैसा कि पौलुस वर्णन करता है। उद्धारण, हम परमेश्वर की महिमा की आशा में घमण्ड करते हैं।

रोमियों 5:2. हमारा भावी महिमामंडन मसीह की शानदार वापसी के बाद होगा। तीतुस 2:13. 1 पतरस 4:13.

और यह ब्रह्माण्ड के नवीनीकरण से जुड़ा हुआ है। रोमियों 8:19-23. 2 पतरस 3:13.

रोमियों 8:19-23. 2 पतरस 3:13. परमेश्वर के लोगों के रूप में ये सभी, परमेश्वर के लोगों के रूप में हम सभी, जीवित और पुनर्जीवित मृत दोनों, एक साथ महिमा पाएंगे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:15-18. 1 कुरिन्थियों 15:51-52. मसीह के स्वरूप के अनुरूप.

परमेश्वर की वह छवि जिसमें हम सृजे गए थे, उत्पत्ति 1:26-27, अभी भी हमारे अस्तित्व में विद्यमान है। पतन में इसका कार्य धूमिल हो गया था, लेकिन मसीह में धीरे-धीरे बहाल हो गया है। कुलुस्सियों 3:9-10.

इफिसियों 2:22-24. यह तभी पूर्ण होगा जब मसीह, सच्ची छवि, 2 कुरिन्थियों 4:4, कुलुस्सियों 1:15, पुनरुत्थान में हमें अपनी छवि के अनुरूप शक्तिशाली रूप से ढाल देगा। उद्धारण, फिलिप्पियों 3:21.

वह हमारी दीन-हीन देह को अपनी महिमामय देह के स्वरूप में उस शक्ति के द्वारा रूपान्तरित कर देगा जो उसे सब कुछ अपने अधीन करने में सक्षम बनाती है। फिलिप्पियों 3:21. सिंक्लेयर फर्ग्यूसन ने पवित्र आत्मा पर अपनी पुस्तक में बताया है, उद्धारण, छवि और छवि धारक अंत तक आत्मा में एक हैं, ताकि जब मसीह महिमा में प्रकट हो, तो छवि धारक उस महिमा में उसके साथ एक हो जाएँ।

कुलुस्सियों 3:4. हम मसीह में, मसीह के साथ, मसीह के द्वारा, मसीह के समान बनने के लिए जी उठे हैं। इसी बीच, हम तुम में मसीह को जानते हैं, जो महिमा की आशा है। कुलुस्सियों 1:27.

मसीह की महिमा में सहभागिता। पॉल लिखते हैं, उद्धारण, मैं समझता हूँ कि वर्तमान समय के दुःख उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है। रोमियों 8:18 .

आश्चर्यजनक रूप से, महिमा का अर्थ है पुनर्जीवित संत मसीह की महिमा को देखना और उसके द्वारा रूपांतरित होना। इसलिए, इसका हिस्सा बनने के लिए, परमेश्वर हमारे लिए महिमा का एक बिल्कुल अतुलनीय अनन्त भार उत्पन्न करेगा। 2 कुरिन्थियों 4:17.

यीशु की प्रार्थना के उत्तर में, हम उसकी महिमा देखेंगे। यूहन्ना 17:24. और वह दर्शन हमें बदल देगा।

फिलिप्पियों 3:21. 1 यूहन्ना 3:2. ताकि हम वास्तव में उसकी महिमा के भागी बन सकें. 1 पतरस 5:2. परमेश्वर ने हमें महिमा के लिए पहले से ही तैयार किया है.

रोमियों 9:23. शुरू से ही और अपने अनुग्रह से, वह कई पुत्रों को महिमा में लाएगा। इब्रानियों 2:10.

अंत में, महिमामय शरीरों के साथ जीवित। यद्यपि मृत्यु के समय, हमारी आत्माएँ परिपूर्ण हो जाती हैं। इब्रानियों 12:23.

महिमा में हमारे शरीर का छुड़ाया जाना शामिल है। रोमियों 8:23। हमारे वर्तमान शरीर और हमारे पुनरुत्थित शरीर के बीच निरंतरता होगी।

पुनरुत्थान शरीर, पद 11. इसमें भी असंततता होगी, क्योंकि हमारे नए शरीर अविनाशी, महिमामय, शक्तिशाली और अमर होंगे। 1 कुरिन्थियों 15:42 से 54.

भौतिक और आत्मिक दोनों होंगे। श्लोक 44, जिसका अर्थ है अमूर्त नहीं, बल्कि आत्मा द्वारा शासित। एक नवीनीकृत सृष्टि में निवास करना।

विश्वासियों के रूप में, हम ब्रह्मांड के अंतिम मोचन का एक छोटा सा हिस्सा हैं। स्थूल जगत। उद्धारण, सृष्टि स्वयं भी भ्रष्टाचार के बंधन से मुक्त होकर परमेश्वर की संतानों की शानदार स्वतंत्रता में प्रवेश करेगी।

रोमियों 8:21. परमेश्वर अपनी सृष्टि को शाप से मुक्त करके उसके लिए अपना उद्देश्य पूरा करेगा। प्रकाशितवाक्य 22:3. और हमें परिपूर्ण करेगा।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23. और उसे परिपूर्ण करना। 2 पतरस 3:13.

फर्ग्यूसन ने इसे अच्छी तरह से व्यक्त किया है। उद्धारण, इस महिमा की परिणति अंतिम समय और पुनरुत्थान में आत्मा की सेवकाई की प्रतीक्षा करती है। यहाँ भी, उसके काम करने का पैटर्न मसीह में है, वैसा ही विश्वासियों में है, और निहितार्थ से, ब्रह्मांड में भी है। उद्धारण बंद करें। फर्ग्यूसन, *पवित्र आत्मा*, पृष्ठ 249।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम धार्मिक विषयों के संदर्भ में उद्धार के बारे में सोचना शुरू करेंगे, यह दिखाते हुए कि कैसे वे विषय उन कई सिद्धांतों के माध्यम से घूमते हैं जिनका हमने इन पिछले व्याख्यानों में अध्ययन किया है।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 4, व्यवस्थित सूत्रीकरण, धर्मत्याग, अनन्त जीवन, महिमा।